REET 2025
LEVEL-1&2
वंदन बैच
संस्कृत
धातुरूप
LIVE
20-01-2025 03:00 PM

धातुरूप सामान्य परिचय

जिस शब्द द्वारा किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं और क्रियापद के मूलरूप को धातु कहा जाता है।

उदाहरणार्थ — रामः पुस्तकं पठति।

इस वाक्य में राम कर्ता है और उसके द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है। यहाँ 'पठ्' धातु के द्वारा पढ़ना क्रिया का होना प्रकट होता है। जिससे 'पठति' रूप बना है।

इनका विभाजन 10 गणों में किया गया है।

- ☐ भ्वादिगण (भू + आदि, जैसे - भू)
- ☐ अदादिगण (अद् + आदि, जैसे - अद्)
- ☐ जुहोत्यादिगण (जुहोति + आदि, जैसे - जुहोति)
- ☐ दिवादिगण (दिव् + आदि, जैसे - दिव्)
- ☐ स्वादिगण (सु + आदि, जैसे - स्वद्)
- ☐ रुधादिगण (रुध् + आदि, जैसे - रुध्)
- ☐ तुदादिगण (तुद् + आदि, जैसे - तुद्)
- ☐ तनादिगण (तन् + आदि, जैसे - तन्)

- क्र्यादिगण (क्री + आदि, जैसे - क्री)
- चुरादिगण (चुर् + आदि, जैसे - चुर्)

गणों के नामकरण का आधार उस गण में आने वाली प्रथम धातु है,

जैसे— 'भ्वादिगण' का आधार उसमें सर्वप्रथम आनेवाली 'भू' धातु है (भू + आदि)। 'चुरादिगण' का आधार सर्वप्रथम आने वाली 'चुर्' धातु है। इसी प्रकार अन्य गणों का नामकरण भी उनके प्रथम धातु पर ही आधारित है।

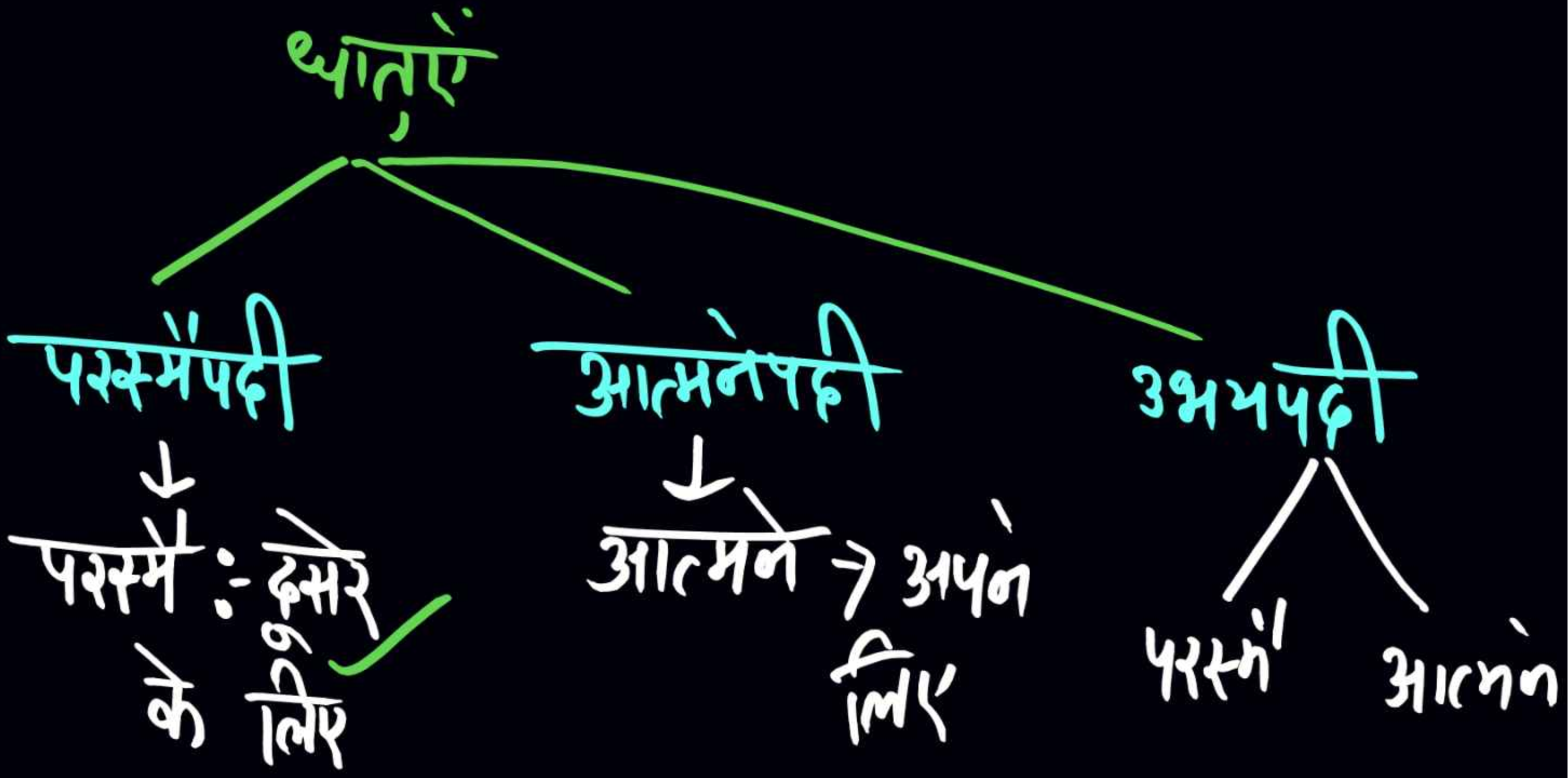
धातुएं
परस्मैपदी
आत्मनेपदी
उभयपदी
परस्मै :- दूसरे के लिए
आत्मने → अपने लिए
परस्मै
आत्मने

इसके अतिरिक्त प्रत्येक गण में तीन प्रकार की धातुएँ पाई जाती हैं—

i. परस्मैपदी

ii. आत्मनेपदी

iii. उभयपदी

प्रत्येक गण में तीन प्रकार की धातुएँ पाई जाती हैं:

1. परस्मैपदी धातु

- इनका वर्तमानकाल में "ति", "तः", "अन्ति" जैसे रूप होते हैं।
- उदाहरण: पठ् → पठति, पठतः, पठन्ति।

2. आत्मनेपदी धातु

- इनका वर्तमानकाल में "ते", "इते", "अन्ते" जैसे रूप होते हैं।
- उदाहरण: सेव् → सेवते, सेवेते, सेवन्ते।

3. उभयपदी धातु

- इन धातुओं में दोनों प्रकार के रूप पाए जाते हैं (परस्मैपदी और आत्मनेपदी)।
- उदाहरण:
  - कृ (प.) → करोति; (आ.) → कुरुते।
  - ब्रू (प.) → ब्रवीति; (आ.) → ब्रूते।

- परस्मैपदी धातुएँ: पठ्, लिख्, गम्।
- आत्मनेपदी धातुएँ: सेव्, मुद्, लभ्।
- उभयपदी धातुएँ: कृ, ब्रू, पच्।

प्रकार	क्रिया का फल किसे मिलता है?	उदाहरण धातु	वाक्य उदाहरण
परस्मैपदी	दूसरों को	पठ्, लिख्	रामः पुस्तकं पठति। (राम पुस्तक पढ़ता है।)
आत्मनेपदी	स्वयं कर्ता को	सेव्, लभ्	बालकः गुरोः सेवते। (लड़का गुरु की सेवा करता है।)
उभयपदी	दोनों प्रकार से	कृ, ब्रू	रामः कार्यं करोति। (राम कार्य करता है।)
			रामः कार्यं कुरुते। (राम अपने लिए कार्य करता है।)

लकार (10)

1. लट् लकार
2. लिट् लकार
3. लुट् लकार
4. लृट् लकार
5. लेट् लकार
6. लोट् लकार
7. लङ् लकार
8. लिङ् लकार (विधिलिङ् + आशीर्लिङ्)
9. लुङ् लकार
10. लृङ् लकार

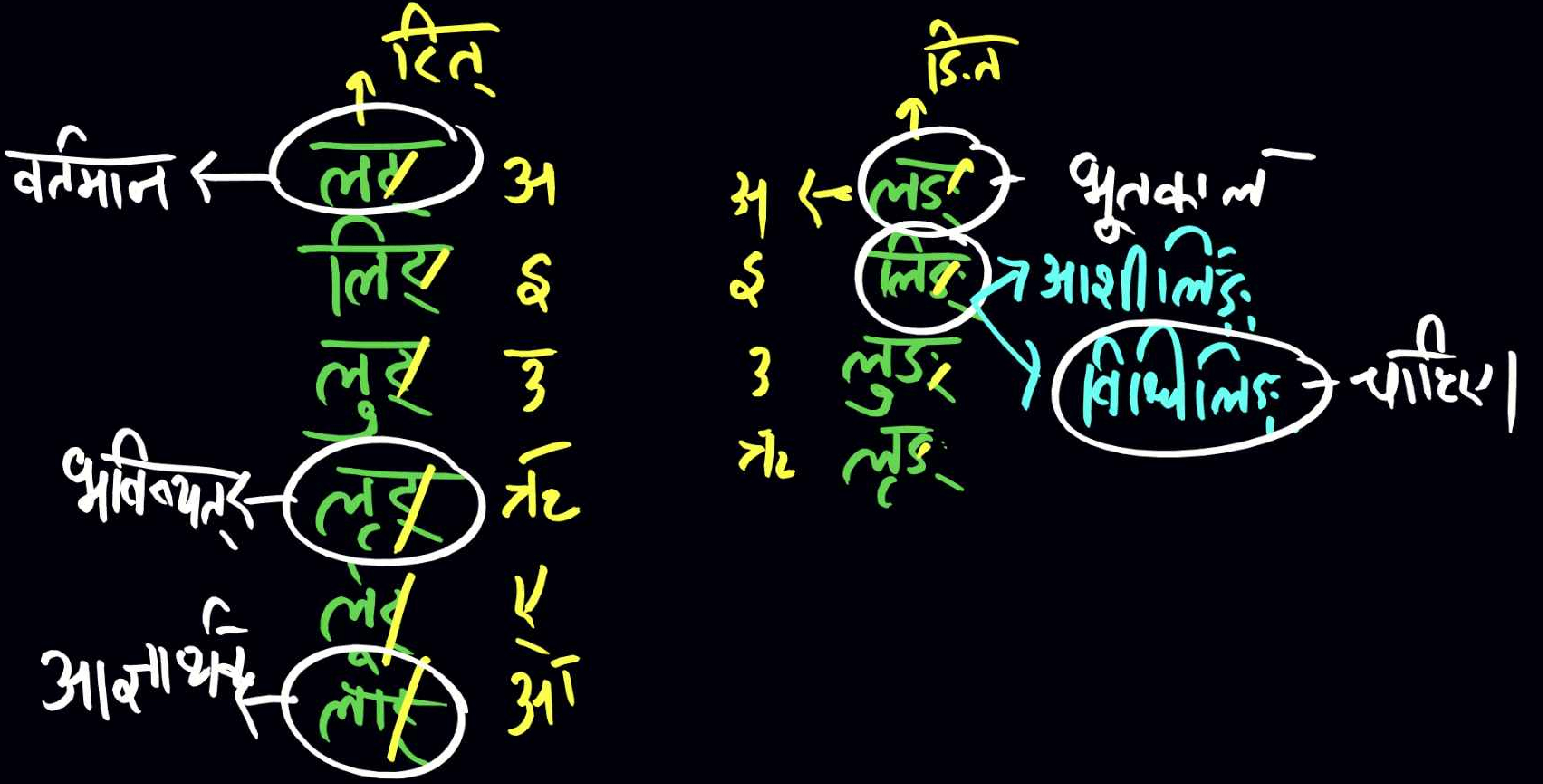

टित्
वर्तमान ← लट् अ
लिट् इ
लुट् उ
भविष्यत् ← लृट् ऋ
लेट् ए
आज्ञार्थ ← लोट् ओ
ङित्
अ ← लङ् → भूतकाल
इ लिङ् → आशीर्लिङ्
विधिलिङ् → चाहिए।
उ लुङ्
ऋ लृङ्

❖ **लट् लकार—** वर्तमानकाल को व्यक्त करने के लिए लट्लकार का प्रयोग किया जाता है।

स: लेखं लिखति।

वह लेख लिखता है।

❖ **लृट् लकार —** सामान्य भविष्यत् काल की घटनाओं को व्यक्त करने के लिए लृट् लकार का प्रयोग किया जाता है।

❖ **यथा—** स: लेखं लेखिष्यति।

वह लेख लिखेगा।

❖ **लोट् लकार** - आज्ञा देने के भाव को प्रकट करने के लिए लोट् लकार का प्रयोग किया जाता है।

❖ यथा— सः गृहकार्यं करोतु।

वह घर का कार्य करें।

❖ **लङ् लकार**— अनद्यतन भूतकाल की क्रिया को बताने के लिए लङ् लकार का प्रयोग किया जाता है।

❖ यथा— रामः पाठम् अपठत्।

राम ने पाठ पढ़ा।

❖ **विधिलिङ्—** 'चाहिए', 'करे' आदि विध्यात्मक भावों को प्रकट करने के लिए विधिलिङ् का प्रयोग किया जाता है।

❖ यथा— स: लेखं लिखेत्।

उसको लेख लिखना चाहिए।

लट् लकार (वर्तमानकाल)

	परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय			आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय		
	ए. व.	द्वि. व.	ब. व.	ए. व.	द्वि.व.	ब. व
प्रथम पुरुष	ति	तः	अन्ति	ते	इते	अन्ते
मध्यम पुरुष	सि।	थः	थ	से	इथे	ध्वे
उत्तम पुरुष	मि	वः	मः	इ	वहे	महे

अहं गच्छामि / आवां गच्छावः / वयं गच्छामः

त्वं पठसि / युवां पठथः / यूयं पठथ

रामः पठति	बालकौ पठतः	बालकाः पठन्ति
सीता पठति	बालिके पठतः	बालिकाः पठन्ति
सः पठति	तौ पठतः	ते पठन्ति
वाहनं गच्छति	वाहने गच्छतः	वाहनानि गच्छन्ति

धातुरूप (१)

	एक.	द्वि.	बहु.
प्रथम पुरुष	बालक:/स:	बालकौ/तौ	बालका:/ते
श्रोता (युष्मद् → तुम) मध्यम पुरुष	त्वम् (तुम/तू) सि	युवाम् थ: (तुम दो)	युयम् थ (तुम सब)
वक्ता (अस्मद्) मैं उत्तम पुरुष	अहम् मि (मैं)	आवाम् व: (हम दो)	वयम् म: (हम सब)

लट्लकार (वर्तमान काल)

परस्मैपदी क्रिया प्रत्यय

एव.	द्विव.	बव.
पठति	पठतः	पठन्ति
पठसि	पठथः	पठथ
पठामि	पठावः	पठामः

बालकः पठति
बालकौ पठतः
बालकाः पठन्ति
त्वं पठसि
युवां पठथः
यूयं पठथ
अहं पठामि
आवां पठावः
वयं पठामः

आत्मनेपदी क्रिया प्रत्यय

एव.	द्विव.	बव.
सेवते	सेवेते	सेवन्ते
सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
सेवे	सेवावहे	सेवामहे

बालकः सेवते
बालकौ सेवेते
बालकाः सेवन्ते
त्वं सेवसे
युवां सेवेथे
यूयं सेवध्वे
अहं सेवे
आवां सेवावहे
वयं सेवामहे